आर्यों का नैतिक जीवन अब भी श्रेष्ठ था। सदाचार और सत्कर्म उनके जीवन के आधार थे।

(v) **शिक्षा**—शिक्षा का प्रारम्भ *उपनयन-संस्कार* से होता था। राज्य की ओर से शिक्षा का प्रबन्ध न था अपितु गुरु अपने घरों अथवा आश्रमों में निःशुल्क शिक्षा प्रदान करते थे। विद्यार्थियों को गुरु के पास ही रहना पड़ता था। वे प्रत्येक प्रकार से गुरु की आज्ञा का पालन करते थे, उसकी सेवा करते थे, भिक्षा माँगकर लाते थे और शिक्षा समाप्त होने पर गुरु को स्वेच्छा से गुरु-दक्षिणा देते थे। स्त्री-पुरुष दोनों ही शिक्षा प्राप्त करते थे और विद्वान् स्त्रियाँ शिक्षा प्रदान भी करती थीं। धार्मिक और नैतिक शिक्षा प्रधान थी। स्वाध्याय, प्राणायाम और शारीरिक परिश्रम पर बल दिया जाता था। साधारणतया शिक्षा-काल 12 वर्ष का था। इस काल में आर्यों को लेखन और लिपि का ज्ञान हो गया था परन्तु शिक्षा अब भी मौखिक ही दी जाती थी। इस कारण स्मरण-शक्ति शिक्षा के लिए परम आवश्यक थी। सम्भवतया आर्यों को लिपि का ज्ञान 700 ई. पू. में हुआ क्योंकि 500 ई. पू. से लिपि का प्रयोग पूर्णरूपेण आरम्भ हो चुका था। शिक्षा में विवाद-प्रणाली का भी महत्वपूर्ण स्थान था।

धर्म के अतिरिक्त, शिक्षा के मुख्य विषय इतिहास, व्याकरण, गणित, तर्क, ज्योतिष, नीतिशास्त्र, आयुर्वेद, शस्त्र-शिक्षा आदि थे। संस्कृत आर्यों की मुख्य भाषा थी परन्तु यह जनसाधारण की भाषा न थी।

4. आर्थिक जीवन (Economic Life)

इस काल में आर्यों के आर्थिक जीवन में पर्याप्त प्रगति हो गयी जिसके कारण बड़े-बड़े नगरों का निर्माण सम्भव हो सका। इस काल में मुख्य व्यवसाय 'कृषि' हो गया। अथर्ववेद के विवरण के अनुसार सबसे पहले पृथवैन्य ने हल एवं कृषि को जन्म दिया। कालांतर में पर्याप्त प्रगति भी हुई। 24 बैलों तक को हल में जोतने के उदाहरण प्राप्त होते हैं। सर्वप्रथम *शतपथ ब्राह्मण* में कृषि की समस्त प्रक्रियाओं कर्षण (जुताई), वपन (बुआई), लुनन (कटाई) एवं मर्वन (मड़ाई) का उल्लेख मिलता है। निस्सन्देह, ऐसे हल लोहे के बनते थे क्योंकि आर्यों को लोहे का ज्ञान 800 ई. पू. में हो गया था। जौ, चावल, गेहूँ, उड़द, मूँग, तिल, मसूर आदि खाद्यान्न पैदा किये जाते थे और वर्ष में दो फसलें उत्पन्न की जाती थीं। दो तरह के धान ब्रीहि एवं ताण्डुल तथा ईक्षु (ईख) का उल्लेख अथर्ववेद में मिलता है। हस्तिनापुर से जंगली किस्म के गन्ने के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं। इस समय में खाद का प्रयोग और ऋतुओं का ज्ञान कृषि-प्रणाली में उन्नति हो जाने के प्रमाण थे।

कृषि-भूमि किसान की व्यक्तिगत सम्पत्ति थी जबकि चरागाह की सम्पत्ति गाँव की सम्मिलित सम्पत्ति थी। लगान के रूप में किसान राज्य को पैदावार का 1/10 से 1/6 भाग दिया करते थे।

दूसरा मुख्य पेशा 'पशु-पालन' था। गाय, बैल, भेड़, बकरी, घोड़ा, कुत्ता, गधा आदि के अतिरिक्त हाथी भी पाला जाने लगा था। इसके अतिरिक्त शिकारी, मछुए, सारथी, कुम्हार, सुनार, लुहार, रस्सी बनाने वाले, टोकरी बुनने वाले, धोबी, नाई, जुलाहा, रंगरेज, नर्तक, ज्योतिषी, चिकित्सक, गायक, जौहरी आदि का उल्लेख मिलता है जो उस काल के विभिन्न व्यवसायों के प्रतीक हैं। उत्तरवैदिक-काल की एक मुख्य विशेषता व्यवसायों की संख्या में वृद्धि होना भी था। इन विभिन्न व्यवसायों के अनेक विवरण हमें 'पुरुषमेध' के विवेचन में प्राप्त होते हैं।

Scanned with CamScanner

व्यापार प्रगति पर था और उस काल में विदेशी व्यापार तथा समुद्री-यात्राएँ होती थीं, इसमें सन्देह नहीं किया जाता है। 'श्रेष्ठिन' शब्द के बारम्बार प्रयोग से यह भी अनुमान किया जाता है कि धनाढ्य व्यापारी और, सम्भवतया, उनके व्यापारिक संघ थे। कर्ज देना एक लाभदायक व्यवसाय था। यद्यपि आर्यों ने अभी तक सिक्के बनाना प्रारम्भ नहीं किया था परन्तु विनिमय के लिए 'सतमान' और 'निष्क' नामक सोने के टुकड़ों का प्रयोग होता था जो एक निश्चित वजन के होते थे।

यातायात के लिए मुख्यतः बैलगाड़ी का प्रयोग होता था। कभी-कभी घोड़ों और हाथियों का प्रयोग भी इस कार्य के लिए किया जाता था। नावों और समुद्री जहाजों का प्रयोग नदियों व समुद्रों पर यातायात एवं यात्राओं के लिए होता था।

आर्यों का धातु-ज्ञान भी पहले से अधिक हो गया था। ऋग्वैदिक आर्य मुख्यतया सोना, काँसा और ताँबे का प्रयोग करते थे। परन्तु अब आर्य चाँदी, लोहा, पीतल और सीसा का प्रयोग भी करने लगे थे।

5. धर्म तथा दर्शन (Religion and Philosophy)

उत्तर-वैदिक काल में धर्म और दर्शन में महत्वपूर्ण प्रगति हुई। यह कहा गया है कि "उत्तर-वैदिक काल का महान् कार्य हिन्दू धर्म का संगठन है।"[1] इस कथन की सत्यता इस काल में हुए सामाजिक संगठन से अधिक धर्म और दर्शन के क्षेत्र में हुए परिवर्तनों से परिलक्षित होती है।

इस काल में आर्यों के देवता वही रहे परन्तु उनके महत्व और आधार में परिवर्तन हो गया। इस काल में इन्द्र, वरुण, अग्नि और सूर्य जैसे ऋग्वैदिक देवताओं का स्थान गौण हो गया। उनके स्थान पर **शिव**, जो रुद्र का परिवर्तित स्वरूप था, **विष्णु** अथवा **नारायण** और **ब्रह्मा** अर्थात् **प्रजापति** का स्थान प्रमुख हो गया। देवताओं की संख्या में वृद्धि हो गयी और उनमें से अनेक दिग्पाल, गन्दर्भ, यक्ष, नाग आदि माने जाने लगे। यक्षणियों और विभिन्न अप्सराओं का भी प्रादुर्भाव हुआ। इसके अतिरिक्त, विभिन्न देवताओं की प्रकृति से, जो उनकी उत्पत्ति का आधार था, सम्पर्क समाप्त हो गया। अब देवताओं को मूलतया राक्षसों को नष्ट करने वालों के रूप में माना जाने लगा।

इस काल में कर्मकाण्ड और विभिन्न संस्कारों पर बल दिया गया। कर्मकाण्ड के कारण यज्ञ और बलि प्रमुख धार्मिक कार्य बन गये। पहले जिन कार्यों की पूर्ति 'गृहपति' कर लिया करता था अब उसे ब्राह्मण पुरोहित-वर्ग करने लगा। ऋग्वैदिक-काल के 7 पुरोहितों के स्थान पर उत्तरवैदिक-काल में 14 पुरोहितों का उल्लेख मिलता है। मन्त्रों और स्तुतियों की भावना पर बल न देकर क्रिया-विधि और उनके शुद्ध उच्चारण पर बल दिया जाने लगा। यह विश्वास किया जाने लगा कि उचित क्रिया-विधि से देवताओं को प्रसन्न तो क्या उन्हें अपने वश में भी किया जा सकता है। विभिन्न कार्यों में सफलता प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रकार के यज्ञ किये जाने लगे और उनमें विभिन्न प्रकार की बलि (Sacrifices) दी जाने लगीं। उनमें से एक **व्रात्य स्तोम यज्ञ** था जिसके कारण अनार्यों को आर्य-समाज में स्थान दिया जाता था। एक अन्य **राजसूय-यज्ञ** था जो राजा के राज्याभिषेक के अवसर पर किया जाता था और राजा उस

Scanned with CamScanner

सम्पन्न पुरुषों के द्वारा राज्य-विस्तार कराता था। एक अन्य अश्वमेध-यज्ञ था जिसमें राजा एक वर्ष के लिए यज्ञ के घोड़े को विभिन्न स्थानों पर जाने के लिए स्वतन्त्र छोड़ देता था और जहाँ-जहाँ वह घोड़ा जाता था वहाँ-वहाँ पर विजय करता था। उस अश्व की बलि से यज्ञ समाप्त होता था। एक अन्य पुरुषमेध-यज्ञ था जिसमें एक पुरुष की बलि दी जाती थी। कर्मकाण्ड में वृद्धि का एक प्रमुख कारण समाज में ब्राह्मणों और क्षत्रियों की श्रेष्ठता को बनाये रखना था। कर्मकाण्ड केवल ब्राह्मण ही करा सकता था जिससे समाज में उसे एक विशिष्ट स्थान प्राप्त हो गया। क्षत्रियों ने भी उसका समर्थन किया क्योंकि कर्मकाण्ड का धार्मिक स्वरूप उन्हें अन्य वर्णों पर अपने प्रभाव और आधिपत्य को बनाये रखने में सहायता प्रदान करता था।

एक आर्य से अपने जीवन में 40 संस्कारों को पूर्ण करने की अपेक्षा की जाती थी और प्रत्येक संस्कार एक यज्ञ और समारोह का अवसर था। ब्राह्मण-ग्रन्थों में मुख्यतया यज्ञ, बलि, संस्कार और उनकी क्रिया-विधि का वर्णन है। **डॉ. राजबली पाण्डे** ने इन संस्कारों को पाँच भागों में बाँटा है—1. जन्म से पूर्व के संस्कार; 2. शिशु के संस्कार; 3. शिक्षा-सम्बन्धी संस्कार; 4. विवाह; और 5. अन्त्येष्टि (मृत्यु) संस्कार।

कर्मकाण्ड, यज्ञ और बलि से विरक्त होकर तप का विचार भी इसी काल में उत्पन्न हुआ। मूलतया अरण्यकों ने तप के विचार का प्रतिपादन किया। अरण्यकों ने ध्यान पर बल दिया और शरीर को विभिन्न प्रकार के कष्ट देकर परम-ब्रह्म (अथवा मोक्ष) की प्राप्ति का मार्ग बताया। तप का अर्थ था जंगल में जाकर धूप, सर्दी, वर्षा, समय आदि की परवाह न करते हुए ईश्वर का ध्यान करना। अरण्यकों ने तप-मार्ग पर बल देकर ज्ञान-मार्ग के लिए आधार तैयार किया।

ज्ञान-मार्ग का प्रतिपादन उपनिषदों ने किया। सत्य-ज्ञान के द्वारा ही ब्रह्म अथवा मोक्ष की प्राप्ति सम्भव है, यह उपनिषदों ने बताया। यदि **उपनिषदों के दर्शन** को एक वाक्य में कहा जाय तो 'संसार अर्थात् ब्रह्म है परन्तु ब्रह्म आत्मा है।'[1] उपनिषदों के अनुसार सत्कर्म, यज्ञ, बलि आदि भविष्य में श्रेष्ठ जीवन प्रदान कर सकते हैं परन्तु ये मोक्ष-प्राप्ति में सहायक नहीं हैं। मोक्ष-प्राप्ति अर्थात् ब्रह्म या परमात्मा में लीन होना केवल ज्ञान के द्वारा सम्भव है। उपनिषदों के अनुसार, "जो ईश्वर को जानता है वह ईश्वर को प्राप्त करता है; यही नहीं अपितु वह स्वयं ईश्वर है।"[2] भारतीय दर्शन में उपनिषदों का विशेष महत्व है। भारत में सभी धर्मों और धर्म-दर्शनों का मूल स्रोत उपनिषद् माने जाते हैं।

नर्क और स्वर्ग की कल्पना तथा ब्रह्म, मोक्ष, पुनर्जन्म और कर्म-सिद्धान्त के विचारों की उत्पत्ति भी इसी काल में हुई। ब्रह्म अथवा परमात्मा एक है और उसे प्राप्त करना अथवा मोक्ष प्राप्त करना जीवन का सबसे प्रमुख आदर्श है, यह विचार इसी काल में परिपक्व हुए। पुनर्जन्म अथवा 'जीव के आवागमन के सिद्धान्त' का अर्थ है कि आत्मा कभी नहीं मरती, वह बार-बार भिन्न रूपों में जन्म लेती है जब तक कि वह मोक्ष प्राप्त करने में सफल नहीं हो जाती। 'कर्म-सिद्धान्त' का अर्थ है कि मनुष्य को अपने इस जीवन में किये कार्यों के अनुसार ही अगले जीवन में फल अथवा परिणाम प्राप्त होते हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि हिन्दू धर्म, दर्शन और विचारों का निर्माण मुख्यतया उत्तर-वैदिक काल में हुआ।

---

1. 'The universe is Brahman

Scanned with CamScanner